गोपाल राजू की चर्चित पुस्तक,
'स्वयं चुनिए अपना भाग्यशाली रत्न'
का सार-संक्षेप

मनहूस घड़ी में जन्म और रत्न चयन

पता नहीं किस मनहूस घड़ी में जन्म लिया है जो ये सब कष्ट झेलने पड़ रहे हैं- ऐसे लोगों को प्रायः आपने कहते सुना होगा। देखा जाए तो वस्तुतः कोई भी घड़ी मनहूस अर्थात अशुभ नहीं होती। आत्मा जब धरती पर जन्म लेता है, तब वह कोई साधारण घड़ी नहीं होती है। जन्म जन्मान्तरों के बाद आत्मा को मनुष्य रुपी चोला मिलता है, तब वह मनहूस घड़ी कैसे हो सकती है, स्वयं मनन करें।

यदि अज्ञानतावश कहीं कोई ऐसा प्रकरण सामने आ रहा हो और उसके जन्म विवरण का भी कोई पता न हो तो वहॉ आप सूर्य, चन्द्र, बुध तथा गुरु के रत्न, उपरत्न, धातु अथवा वनस्पति आदि प्रयोग करवा कर देखिए, मनहूस घड़ी का कलंक अवश्य ही कम होता दिखाई देगा।

दैहिक, भौतिक तथा आध्यात्मिक तीन प्रकार के सुखों की कामना आत्मा के शरीर में प्रवेश करने के बाद से ही अपेक्षा की जाने लगती है। यदि इनमें सम्बन्धित वांछित परिणाम मिलते जाते हैं, तब तो ठीक है। अन्यथा जीवात्मा स्वयं तथा अपने परिजनों अथवा अन्य का आक्रोश झेलना आरम्भ कर देता है।

सूर्य को आत्मा का कारक माना गया है। जीवात्मा का सर्वप्रथम आत्मप्रधान होना आवश्यक है। सूर्य मान, प्रतिष्ठा तथा समृद्धि का प्रतीक है। यह ऐश्वर्य पर प्रतिनिधित्व

करता है। सूर्य को सर्वाधिक तेजस्वी ग्रह माना जाता है। रोगी को पित्र प्रवृत्ति इस ग्रह से ही सुनिश्चित होती है।

चंद्रग्रह को मन का कारक माना गया है। शारीरिक-मानसिक पुष्टि का प्रतिनिधि ग्रह चंद्र ही है। यह सम्पत्ति तथा सौभाग्य का भी सूचक है। रोग में यह कफ प्रवृत्ति पर नियंत्रण रखता है।

बुध वैसे तो नपुंसक ग्रह है, परंतु त्रिसुखों की दृष्टि से यह महत्वपूर्ण योग दान देता है। जिस ग्रह के साथ यह स्थित होता है, वैसा ही व्यवहार करने लगता है। वात रोग का नियंत्रण करने वाला ग्रह यदि बलवान है तो बुद्धि, वाणी और स्नायुतंत्र को संतुलन में रखता है। जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफल बनने के लिए बुद्धि तथा वाणी का स्थिर अथवा नियंत्रण होना अति आवश्यक है।

गुरु ग्रह महत्वाकांक्षाओं का द्योतक है। यह पारलौकिक तथा आध्यात्मिक सुखों में वृद्धि करता है। आत्मा की अंततः सदगति हो जाए इसके लिए गुरु का अनुरुप होना आवश्यक है।

यह चार ग्रह यदि संतुलन में कर लिए जाए तो जीवात्मा का परम कल्याण है, भले ही वह कितनी ही तथाकथित मनहूस घड़ी में जन्मा हो। पुखराज, माणिक्य, पन्ना तथा मोती एक साथ एक ही अंगूठी अथवा पेन्डेंट में धारण करके आप भी इनका चमत्कारिक रुप से सुप्रभाव देख सकते हैं। आयुर्वेद के अनुसार रोगी बनाने वाले त्रिदोष कफ, वात और पित्त को यह संयोग संतुलित करेगा ही, भौतिक तथा आध्यात्मिक सुखों में भी उत्तारोत्तर वृद्धि होना आरंभ हो जाएगा, ऐसा मेरा ही नहीं वरन अनेक अन्य भुग्त-भोगियों का भी अनुभव है।

bopal raju